बेटियाँ

देखा है हमने जिन्दगी की शान बेटियाँ।
खुद ही बनी संघर्ष कर पहचान बेटियाँ।
जनमी, दुलारी हो गयी, माता पिता की वो,
लेकिन पराया मान कर हो दान बेटियाँ।
माता–पिता की लाड़ली अब रो रही हैं क्यों,
क्योंकि अब जल्दी देश से ही खो रही है वो,
स्वारथ दिखाई दे रहा प्यारे सुवन में आज,
करती रही हैं त्याग और बलिदान बेटियाँ।।
देखा है हमने जिन्दगी की शान बेटियाँ।
रावण ने कन्या जानकर धरती में डाल दीं,
वो धन्य जनक जननि जो सीता को पाल दी,
हर चाहता कोई, नहीं पैदा हो मेरे घर,
लेकिन बनी भगवान की वरदान बेटियाँ।।
देखा है हमने जिन्दगी की शान बेटियाँ।
खुद ही बनी संघर्ष कर पहचान बेटियाँ।